मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

सरसों में चितकबरा मत्कुण का समेकित प्रबंधन

राजेंद्र नागर एवं बलबीर सिंह

कृषि विज्ञान केन्द्र (स्वा.के.कृ.वि.वि.), चांद्गोठी चूरू 331305 (राजस्थान)

सरसों भारत की महत्वपूर्ण तिलहन फसल हैं, बहुत से कारक इनके कम व अस्थिर उत्पादन के लिए उत्तरदायी हैं, जिनमे से नाशीकीट प्रमुख हैं। और फसल की विभिन्न अवस्ताओ मे नुकसान पहुचाते हैं। सरसों को लगभग 50 नाशीकीट नुकसान पहुचाते हैं यह कीट उपज मे लगभग 30 से 35 एवं तेल मे 3 से 4 प्रतिशत की कमी कर देता हैं। समय पर इन कीटों की पहचान कर उचित प्रबंधन तकनिकों का उपयोग कर उपज को अधिक बढाकर किसान की आय दुगनी कर सकते हैं सातही खाने वाले तेलों के आयात मे होने वाले व्यय को कम कर सकते हैं।

चितकबरा मत्कुण अत्यधिक बहुभोजिये नाशीकीट हैं। भारतवर्ष मे जहाँ सरसों उगाई जाती हैं, यह पाया जाता हैं यह कीट राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश एवं मध्यप्रदेश मे अत्यधिक नुकसान पहुँचाता हैं इस कीट को चितकबरा, सुन्दर, दगीला, धोलिया आदि नामों से जाना जाता हैं।

इसका प्रोढ सुन्दर और शरीर के ऊपर चमकीले नारंगी रंग के चकत्ते होते हैं इसकी चोड़ाई लगभग 6.5 से 7.0 मिमी. होती हैं पूर्ण विकसित शिशु 4 मिमी. लंबा व 2–6 मिमी. चोडा होता हैं जिस पर भूरी धारियां पाई जाती हैं द्य पहले व दूसरे अवस्था के शिशु कीट का रंग चमकीला नारंगी और तीसरी, चोथी एवं पांचवी का रंग लाल होता हैं

इस कीट का फसल पर दो बार आक्रमण होता हैं। प्रथम बुवाई के 5 से 7 दिन की फसल पर ही आक्रमण शुरू कर देता हैं कीट फसल के छोटे–छोटे पोधों को ज्यादा नुकसान पहुचंता हैं, इसके प्रोढ व शिशु दोनौं ही पोधों से रस चूसते हैं जिससे पत्तियाँ पर सफेद–सफेद चकते हो जाते हैं अत्यधिक प्रकोप की दशा मे पत्तियों सफेद हो जाती हैं, पोधा पूर्णतः सूख जाता हैं और कभी–कभी दुबारा भी बुवाई की जाती हैं फलियाँ बनने और पकने की अवस्था के समय दोबारा इस कीट का प्रकोप होता हैं। जिससे फलियों मे दानो का आकार छोटा, संकुचन व सिकुड़ जाते हैं। जिससे उपज व तेल की मात्रा मे कमी हो जाती हैं।

फसल के समय यदि गर्म व मध्यम तापमान रहे (सितम्बर–नवम्बर और मार्च से मड़ाई तक) तो चितकबरा मत्कुण अत्यधिक आक्रमण होता हैं। मध्यम तापमान (20–40 डिग्री सेल्सियस) व कम आर्द्रता मत्कुण के गुणन के लिए उपयुक्त हैं।

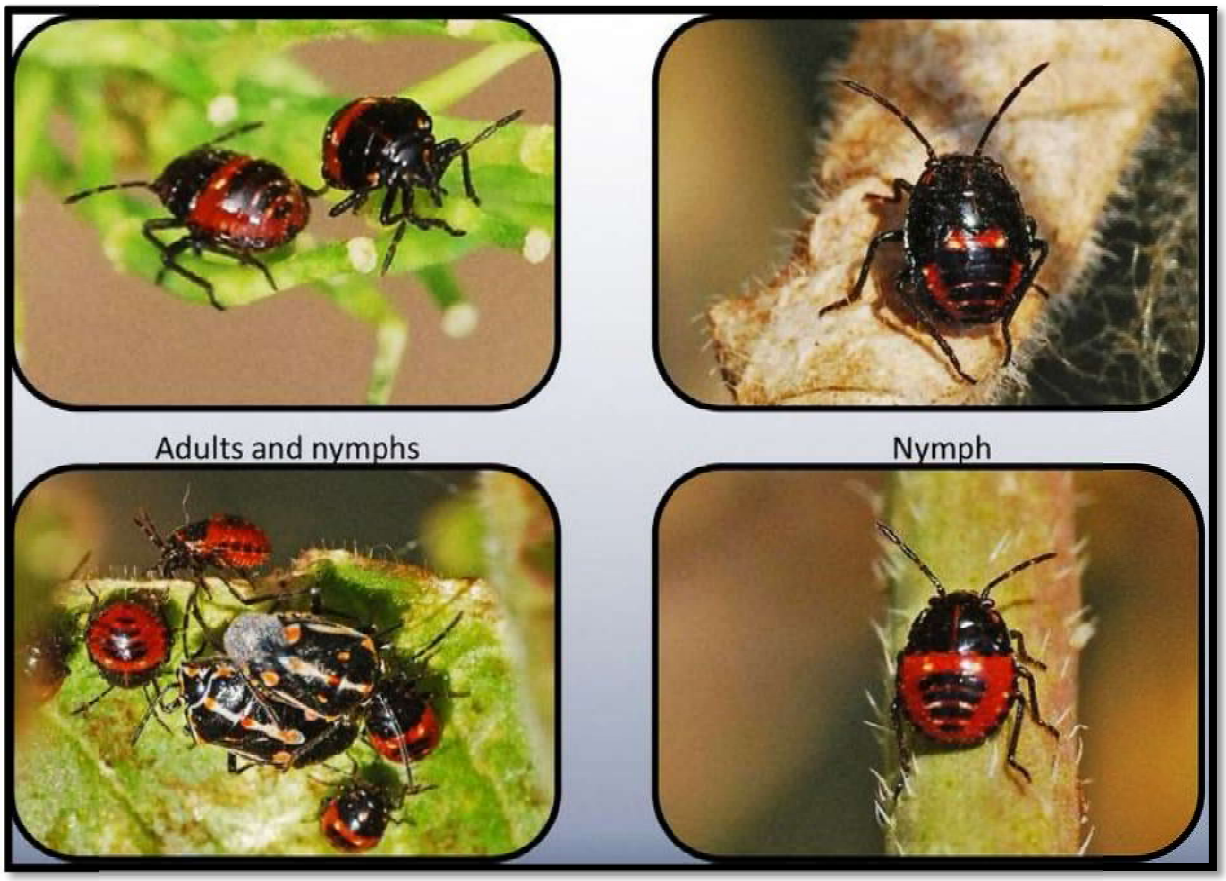

समेकित प्रबंधन

- ❖ खेतों में साफ सफाई रखनी चाहिये तथा आसपास से खरपतवार तथा पादप अवशेषों को जला देना चाहिये ।
- ❖ खेत की गर्मीयों में गहरी जुताई करनी चाहिये ।
- ❖ बीज को इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्लयू.पी. से 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करे।
- ❖ बुवाई के 3–4 सप्ताह बाद यदि संभव हो तो पहली सिचाई कर देनी चाहिये जिससे कि मिट्टी के अन्दर दरारों में रहने वाले कीट मर जाये।
- ❖ फसल की छोटी अवस्था में यदि चितकबरा मत्कुण अत्यधिक आक्रमण हो तो क्यूनालफास 1-5 प्रतिशत धूल 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करे ।
- ❖ अत्यधिक प्रकोप के समय मेलाथियान 50 ई.सी. की 2 मिली पर लीटर (1200 मिली) के हिसाब से छिडकाव करे । कीट का प्रकोप हो तो मेलाथियान 50 ई.सी. क्यूनालफास 25 ई.सी. की 1.5 लीटर मात्रा को पकते समय यदि फसल पर 750 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करे ।
- ❖ कटाई के समय फसल का रंग सुनहरा होने पर कटाई कर ले जिससे की अधिक हानि न हो एवं खलिहान में अधिक नुकसान से बचने के लिए जल्द से जल्द मड़ाई कर देनी चाहिये ।